काशी में आज्ञा दर्शन यात्रा

आज्ञा, दर्शन यात्रा का वर्णन कई पुराणों में प्राप्त है, पुस्तक के कलेवर बढ़ने के भय से यहाँ इतना ही लिखा जा रहा है।

"पूर्वस्मिन्दिवसे ढुण्ढिम्पूजयित्वा हविष्यभुक्।"
प्रातरुत्तरवाहिन्यां स्नात्वा विश्वेशमर्चयेत्।
पुनर्यात्रार्थ मपि च शिवयोः पूजनम् भवेत्॥८॥

(काशी रहस्य अ० १०)

१. अविमुक्तेश्वराय नमः (मकान नं० सी० के०.३५/३१ में है, ढुण्ढिराज गली) अविमुक्तेश्वर अपने दर्शन, पूजन, उपासना करने वाले भक्तों को पापों से मुक्त कर देते हैं, काशी वास करने के लिये अविमुक्तेश्वर से आज्ञा लेनी चाहिए।

२. साक्षीविनायकाय नमः (मकान नं० डी० ७/४० में है, मु० साक्षीविनायक) साक्षीविनायक अपने अर्चना आराधना करने वाले भक्त कहीं भी रहे वह संकट में नहीं पड़ता और उस भक्त को ये सब प्रकार से सुखी रखते हैं। साक्षी विनायक काशी में चित्रगुप्त जी का कार्य करते हैं। काशी में मरने वाले मनुष्यों के पाप पुण्य सब साक्षी विनायक लिखते है। पाप, पुण्य दोनों के बही खाता रखते हैं। काशी

वासी की मृत्यु होने के पश्चात् कालभैरव साक्षी विनायक जी से पूछते हैं इस मृतक का पाप क्या-क्या है? साक्षी विनायक काल भैरव से हाथ जोड़कर प्रार्थना करके पाप और भैरवी यातना से जीव को मुक्त कर देते हैं। निर्विघ्न काशीवास करने के लिये साक्षी विनायक से प्रार्थना करें।

३. दण्डपाणिभ्यो नमः (मकान, नं० सी० के० ३६/११, मुहल्ला ढुण्ढिराज गली)। दण्डपाणि जी शास्त्रविधि से काशी खण्ड के ३२ अ० में विश्वनाथ जी स्वयं दण्डपाणि जी को वरदान दे रहे हैं कि काशी बास करने वाले नर-नारियों को अन्न, वस्त्र, भोजन एवं आवास आदि का व्यवस्था करें। उन काशी वास करने वाले को सत्कर्म कराओ, उनको भक्ति दो, ज्ञान दो और ज्ञान का साधन दो सज्जन विद्वानों का सङ्ग कराओ। उनको सत्सङ्ग दो तथा मेरा निरन्तर स्मरण कराओ काशी वास करने वाले मेरे भक्तों को कष्ट देने वाले दुष्टों को डण्डामार कर उस पापी के अभिमान को चूर्ण करो। काशी वास करने वाले मेरे भक्तों को सदा तुम रक्षा करो, मेरे भक्तों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। विश्वनाथ जी दण्डपाणि जी से कह रहे हैं।

४. काल भैरवाय नमः (मकान नं० सी० के० ३२/२,

२६

मुहल्ला कालभैरव) कालभैरव अपने दर्शन, पूजन, उपासना (मन्त्र का अनुष्ठान) आदि करने वाले भक्तों को छ महीने में सिद्धि देते हैं और काशी वास करने वाले शंकर जी के भक्तों को कष्ट देने वाले को एवं काशी में पाप कर्म करने वाले मनुष्यों को काशी के सीमा से बाहर निकाल देते हैं। यदि उस पापी के पुण्य बहुत अधिक हो जिससे उस व्यक्ति को (डण्डा से मारकर) धन, जन की हानि कराकर पाप कर्म से छुड़ाकर उसको काशी में रखते हैं। काल भैरव काशी के महामन्त्री-प्रधानमन्त्री हैं, काल भैरव काशी की हर प्रकार से रक्षा करते हैं। एक विशेषता यह है कि शंकर जी ने काल भैरव को वरदान दिया है कि काशी से बाहर से जो रोगी काशी में आकर तथा काशी में जो रोग लगा हो वह सब तुमारे दर्शन करते ही रोग शान्त होंगे और तुमारे दर्शन करने के पश्चात् मनुष्यों की पाप कर्म करने की बुद्धि ही समाप्त होगी। वरदान देकर शंकर जी अन्तरध्यान हो गये।

बिन्दुमाधव जी का दूसरा नाम वंणी माधव है। बिन्दुमाधव-विष्णु भगवान काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास कर रहें हैं। स्कन्द पुराण में बिन्दु माधव विष्णु स्वयं शंकर जी से कहते हैं, मैं काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी

वास कर रहा हूँ अब मैं बैकुण्ठ नहीं जाऊँगा। काशी खण्ड में विन्दूमाधव स्वयं कह रहे हैं, मैं काशी में आ गया हूँ। काशीवास करके शिव जी का भजन करूँगा अब मैं लौटकर बैकुण्ठ नहीं जाऊँगा कहते हैं।

५. बिन्दुमाधव विष्णु भगवानाय नमः। (मकान नं० के० २२/३३, मु० पञ्चगङ्गा) बिन्दुमाधव अपने दर्शन-पूजन-आराधना करने वाले भक्तों को शंकर जी की अनन्य भक्ति देते हैं। शंकर भगवान बिन्दुमाधव विष्णु जी से कहते हैं, आप काशी में रहें और काशीवासियों का पालन, पोषण करें तथा काशीवासियों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। बिन्दुमाधव विष्णु अपने भक्तों को शिव और विष्णु की भक्ति देते हैं।

६. भवानी अन्नपूर्णादेव्यै नमः (मकान नं० डी० ९/१७, मु० अन्नपुर्णागली)

प्रार्थना

हे अन्नपूर्णा माँ! मैं पापों का प्रायश्चित्त करने के लिये, सुख-शान्ति प्राप्त करने के निमित्त एवं अपने कुल के उद्धार के लिये तथा पितरों के मोक्ष दिलाने के हेतु से मैं काशीवास करना चाहता हूँ। हे माँ अन्नपूर्णे! मुझे

काशीवास करने के लिये आज्ञा दीजिये।

७. विश्वनाथाय नमः (मकान, नं० सी० के० ३५/१९, मु० विश्वनाथ गली)। हे जगत्गुरु विश्वनाथ जी अनाथों के नाथ काशी विश्वनाथ जी हमें काशीवास करने के लिये आज्ञा दीजिये। आज्ञा यात्रा पूर्ण हुई।

विश्वनाथ नित्य दर्शन-यात्रा

किसी भी दिन गङ्गाजी में मणिकर्णिकाघाट पर स्नान करके शुद्ध धोया हुआ वस्त्र पहनकर त्रिपुण्ड या टीका धारण कर यात्रा करनी चाहिए।

त्रिपुण्ड्रं मस्तके धृत्वावर्तुलं रक्तचन्दनम्।
निधने याति बैकुण्ठं मुक्तों भवति बैजनः ॥

अर्थ - जो मनुष्य मस्तक में त्रिपुण्ड लगाते हैं और त्रिपुण्ड के बीच में रक्त चन्दन लगातें हैं वे व्यक्ति मरने पर जन्म-मृत्यु से मुक्त होकर बैकुण्ठ में जाते हैं।

नबन्ध्यं दिवसं कुर्याद् विना यात्रां क्वचित्कृती।
दृश्यो विश्वेश्रो नित्यं स्नातव्या मणिकर्णिका॥

(काशीखण्ड अ० १००)

अर्थ- हे भवानी काशीवास करने वाले पुण्यवान मनुष्य नित्य मणिकर्णिका या किसी भी घाट में स्नान कर और

८६

विश्वनाथ दर्शन किये बिना कोई भी दिन व्यर्थ न जाने दें।
यात्रा द्वयं प्रयत्नेन कर्तव्यं प्रतिवासरम्।
नि.

(काशीखण्ड अ० १०० श्लोक २)

अर्थ- शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे पार्वती पार्वती जो नर-नारी प्रतिदिन प्रयत्न पूर्वक दोनों यात्रा करते हैं–पहली यात्रा गङ्गा दर्शन और स्नान, दूसरी भगवान काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करते हैं। विश्वनाथ जी कहते हैं कि उनको मैं सुख पूर्वक काशीवास कराता हूँ। और अन्त में उन को मैं मुक्ति देता हूँ।

मणिकर्णिका घाट में स्नान करके गङ्गाजल, पुष्प, अक्षत, पैसा, लायचीदाना, ऋतुफल, धूप, दीप और नैवेद्य, मिष्टान्न, वस्त्र आदि साथ में लेकर हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे कीर्तन करते हुए धीरे-धीरे काशी विश्वनाथ आदि का दर्शन करने जाते हैं, ज्ञानवापी तीर्थ में मार्जन और आचमन करते हैं उनका सर्व प्रकार से कल्याण होता है। किञ्चित् अन्न-पैसा दान देने के पश्चात् मन्दिरों का दर्शन प्रारम्भ करें।

विश्वनाथ नित्य दर्शन यात्रा के मध्य पड़ने वाले मन्दिरों के देवताओं का दर्शन अनिवार्य रूप से करना चाहिए।

६०
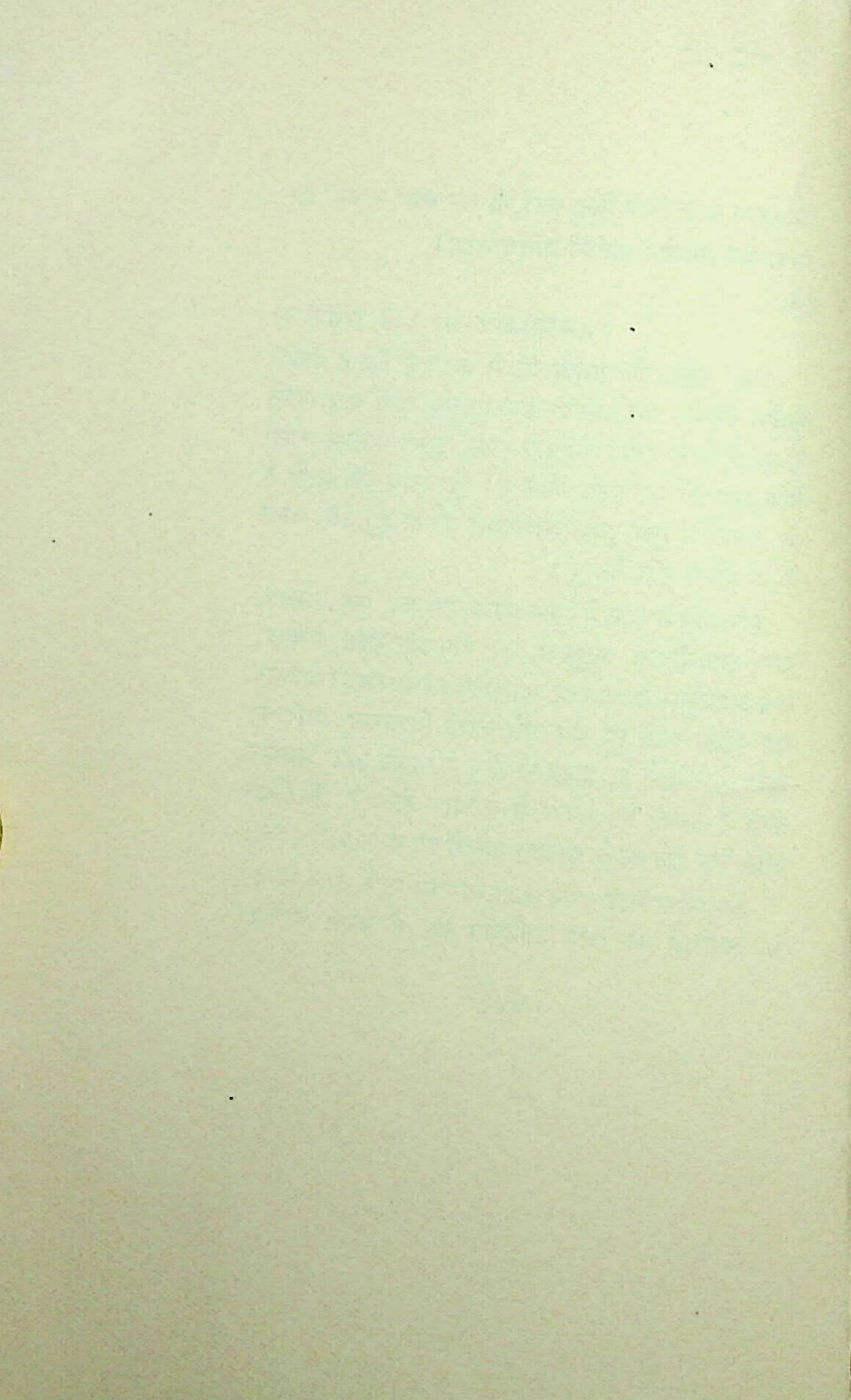
विश्वनाथ जी से दूर रहने वाले भक्तों को प्रत्येक सोमवार के दिन जाकर विश्वनाथ नित्य यात्रा करने के पश्चात् विश्वनाथ भगवान् का दर्शन करना चाहिए। चूँकि इनके दर्शन करने वाले नर-नारियों को विघ्न, कष्ट, दरिद्रता कभी भी नहीं आती तथा इन देवताओं के दर्शन करने से आवास, भोजन एवं सत्सङ्ग और सज्जन, साधु, सन्त महात्माओं का दर्शन स्वतः प्राप्त होता है। काशी के विषय में वर्णन करने वाले सद्ग्रन्थों का और काशी माहात्म्य, काशी मोक्षनिर्णय, काशी दर्शन एवं काशी रहस्य, काशी की महिमा, वेदान्त, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र आदि शङ्कराचार्य की पुस्तकों का अध्ययन, काशी खण्ड, शिवरहस्य, शिवपुराण और लिङ्गपुराण, गीता, भागवत्, रामायण आदि का श्रवण करना चाहिए।

पहले प्रमुख देवताओं का वर्णन करते हैं, द्रौपदादित्य, अन्नपूर्णा भवानी एवं ढुण्ढिराज, साक्षीविनायक, एक्षेविनायक, मोक्षेश्वर, दण्डपाणि, तारकेश्वर का दर्शन करकें विश्वनाथ जी का दर्शन करने वाले नर-नारियों के सब कार्य सिद्ध होते हैं। अब विश्ववनाथ नित्य यात्रा के देव मन्दिरों का वर्णन करता हूँ। जिसमें मन्दिर के दर्शन यात्रा करने से काशीवास में विघ्न, दरिद्रता, कष्ट और रोग नहीं होता उन मंदिरों का

में वर्णन करने जा रहा हूँ। १. ज्ञानवापी ईशान तीर्थाय नमः।

२. तारकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७, मु० ज्ञानवापी तारकेश्वर मन्दिर)।

३. वीरभद्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१० में, मु० अन्नपूर्णागली)।

४. शनिश्चरेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१० में, मु० अन्नपूर्णागली)।

५. द्रौपदादित्य सूर्याय नमः (म० नं० डी० ८/१० में, मु० अन्नपूर्णागली, सूर्य, हनुमान जी के बगल में है)।

६. शुक्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/१० में मु० कालिकागली)।

७. यन्त्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/१७ में है मु० अन्नपूर्णागली)।

८. कुवेरेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१७ में है)।

९. गणनाथाय नमः (म०नं० डी० ९/१७ में है)।

१०. महाविष्णुभगवानाय नमः (म० नं० डी० ९/१७)।

११. महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यै नमः (म० नं० डी० ९/१७ मु० अन्नपूर्णागली)। अन्नपूर्णा माता जी अपने

दर्शन-पूजन एवं उपासना करने वाले भक्तों को धन, ऐश्वर्य और पुत्र-पौत्र आदि सन्तान देती हैं, अन्त में भक्तों को मोक्ष की भिक्षा विश्वनाथ जी से कहकर दिला देती हैं।

१२. भवानी गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० ३/३८ में है) अन्नपूर्णागली के राम मन्दिर में अनेक मूर्तियाँ विराजमान हैं, सब का दर्शन, पूजन करें।

भवानी गौरी जी के दर्शन, पूजन उपासना करने वाले सभी नर-नारियों को भोग्य पदार्थ देकर सुखी बनाती हैं।

१३. शिवरात्रेश्वराय नमः।

१४. सावित्री देव्यै नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में मु० अन्नपूर्णागली)।

१५. द्वारविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७)।

१६. नकुलेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७)।

१७. ढुण्ढिराजाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७)।

१८. एक्षविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३७/१८ में है, मु० ढुण्ढिराज के पश्चिम बगल में कोतवाल पुरा)।

१९. साक्षी विनायकाय नमः (म० नं० डी० ७/४० में है, मु० साक्षी विनायक।)।

६३
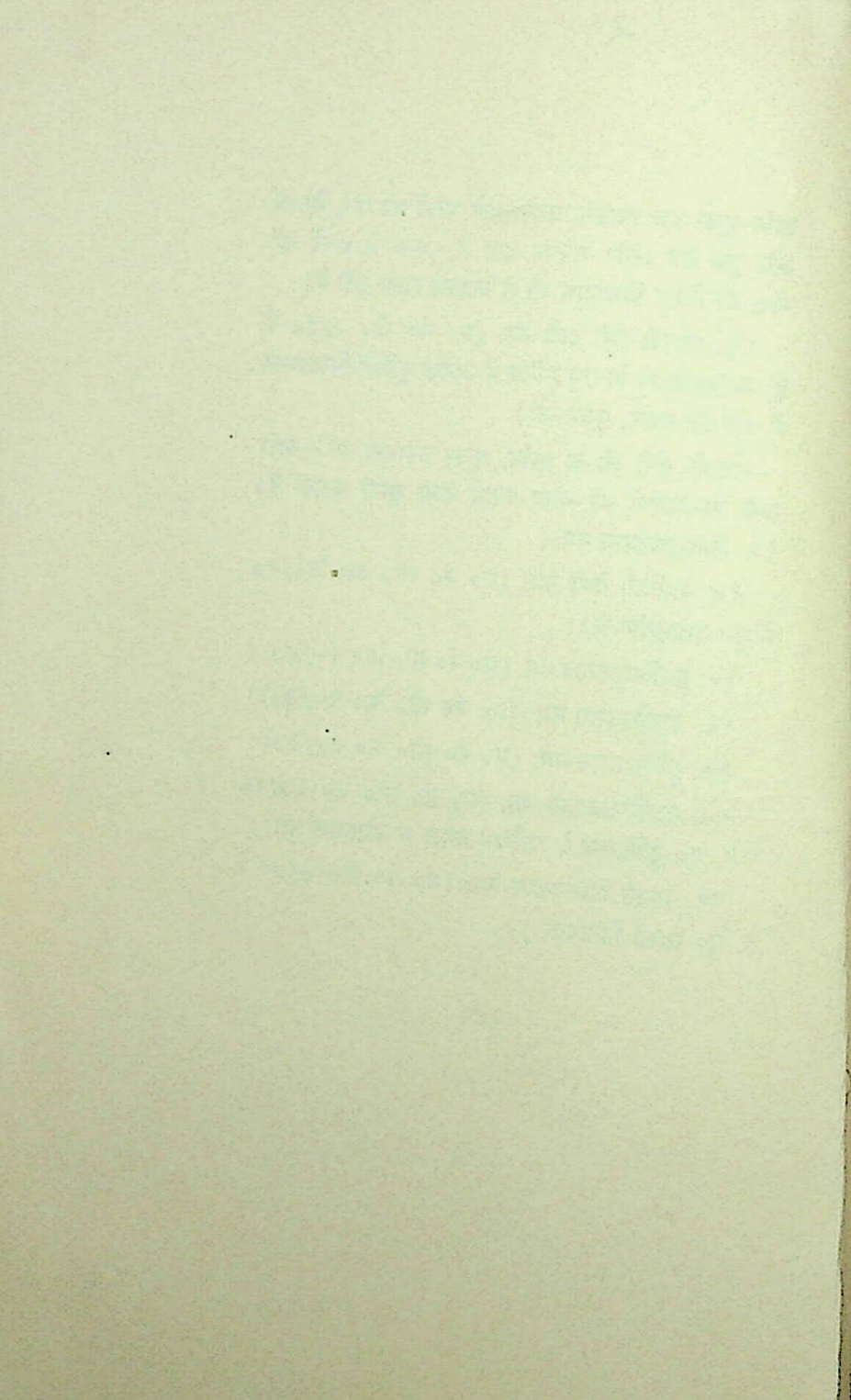
२०. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० सी० के०, २७/१३ में है, मु० ढुण्ढिराज गली।)।

२१. चतुर्वेदेश्वराय नमः।

२२. सतीदेव्यै नमः।

२३. गणेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३७/९ में है, मु० ढुण्ढिराय गली।)।

२४. महेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१२ में है।)।

२४. अविमुक्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३१ में है, मु० ढुण्ढिराज गली।)। अविमुक्तेश्वर के दर्शन, पूजन और उपासना करने वाले नर-नारियों के घर-परिवार के दुःख, रोग एवं विघ्न दूर होते हैं।

२५. राजराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२३ में है, मु० ढुण्ढिराज गली।)

२६. परद्रव्येश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४)।

२७. प्रतिग्रहेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४)।

२८. निश्कलङ्केश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४)।

२९. मार्कण्डेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४)।

३०. दण्डपाणिभ्यौ नमः (म० नं० सी० के० मु० ढुण्ढिराज गली।)

३१. भवानीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३६/१० में है, मु० बाँसफाटक)।

३२. पञ्चपाण्डवेश्वराय।

३३. अप्सरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३०/१ में है, मु० ज्ञानवापी।)

३४. गङ्गेश्वराय नमः (मु० ज्ञानवापी।) ३५. तारकेश्वराय नमः। ३६. महाकालेश्वराय नमः। ३७. नन्दी केश्वराय नमः। ३८. महेश्वराय नमः।

३९. लक्ष्मी नारायण नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७ में है, मु० ज्ञानवापी तारकेश्वर मंदिर।)

४०. ज्ञानमण्डपाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में है, मु० अन्नपूर्णागली।) विश्वनाथ जी के सभा में जो शिवलिङ्ग विराजमान हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं–

४१. वेदेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४२. वेदान्तेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४३. उपनिषदेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४४. पुराणेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४५. श्रुतिस्मृतीश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४६. गीतेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४७. व्याकरणेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में है।)

४८. न्यायेश्वराय नमः। ४९. मीमांसेश्वराय नमः।

५०. वर्णाश्रमेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में है।)

५१. सनातनधर्मेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में है।)

५२. वैदिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में है।)

५३. पञ्चविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में है।)

५४. कालराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में है।)

५५. स्कन्देश्वराय नमः (कार्त्तिकेय जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है।)
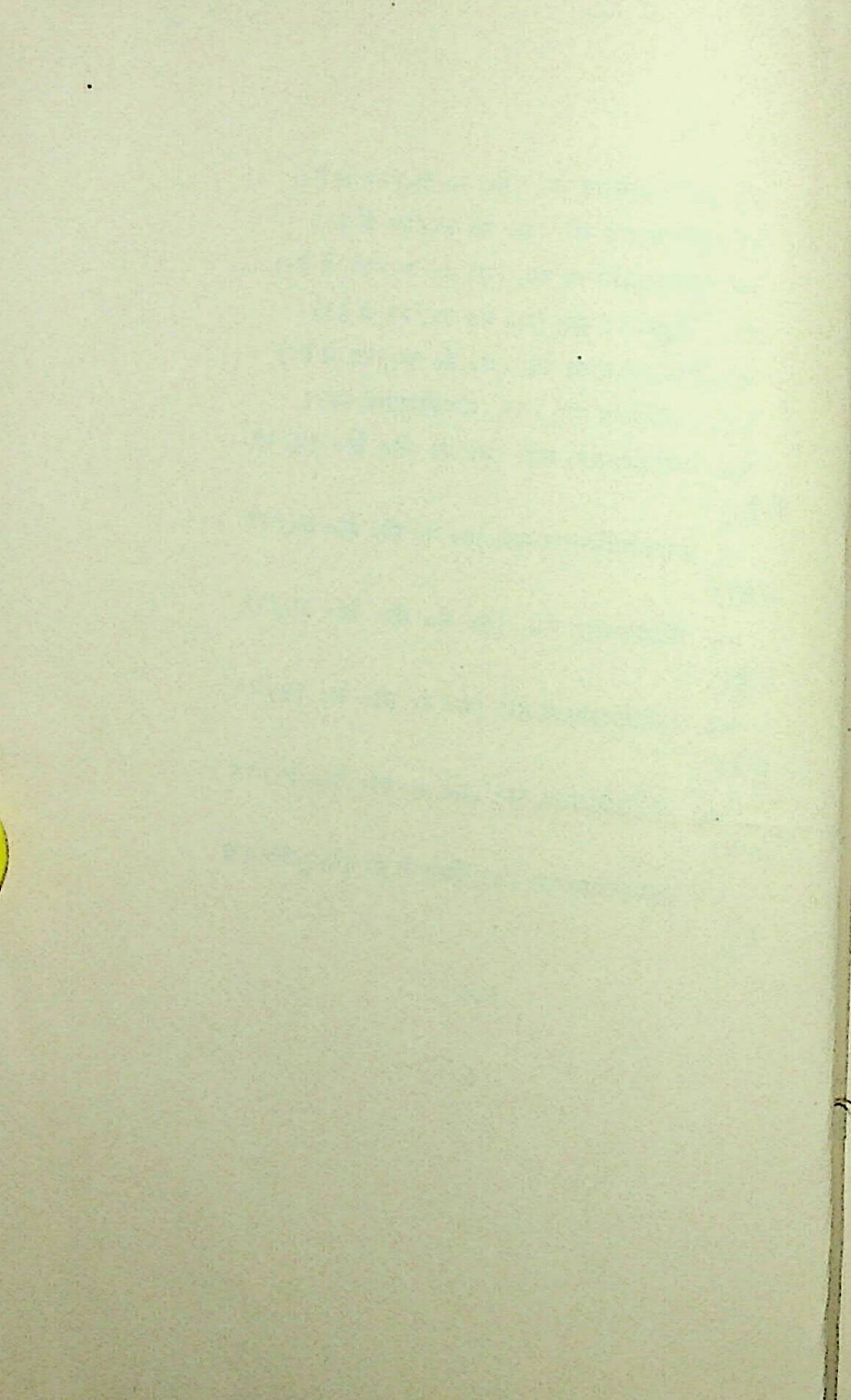
५६. वैकुण्ठेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में है।)

५७. विश्वनाथाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में है, मु० अन्नपूर्णा गली।) विश्वनाथ नित्य यात्रा करने वाले नर-नारियों के मन, वाणी और शरीर से होने वाले पापों का प्रायश्चित्त होता है और काशीवास में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता, आवास, भोजन, वस्त्र आदि सब विश्वनाथ भगवान की कृपा से स्वतः प्राप्त होता है। विश्वनाथ शङ्कर भगवान के भक्त श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर अपना जीवन बनाने के लिए पितरों का उद्धार करने के लिए और इस नाशवान नश्वर परिवर्तनशील जगत् में यह नश्वर क्षणभङ्गुर मलभूत्र से भरा हुआ नाशवान् शरीर जन्म-मृत्यु रूप चक्कर से छूटने के लिए विश्वराष्ट्र से काशी में आकर काशीवास करते हैं, काशी में संन्यास लेकर जीवन पर्यन्त काशीवास करते हैं। क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले नर-नारियों के आगे पीछे भैरव के गण, क्षेत्र संन्यासी की अङ्गरक्षा करते हैं। काशी क्षेत्र में काशीवास करने वाले नर-नारियों को आवास भोजन आदि की व्यवस्था अन्नपूर्णा जी करती हैं, इसलिए प्रयत्न पूर्वक ४० वर्ष की अवस्था
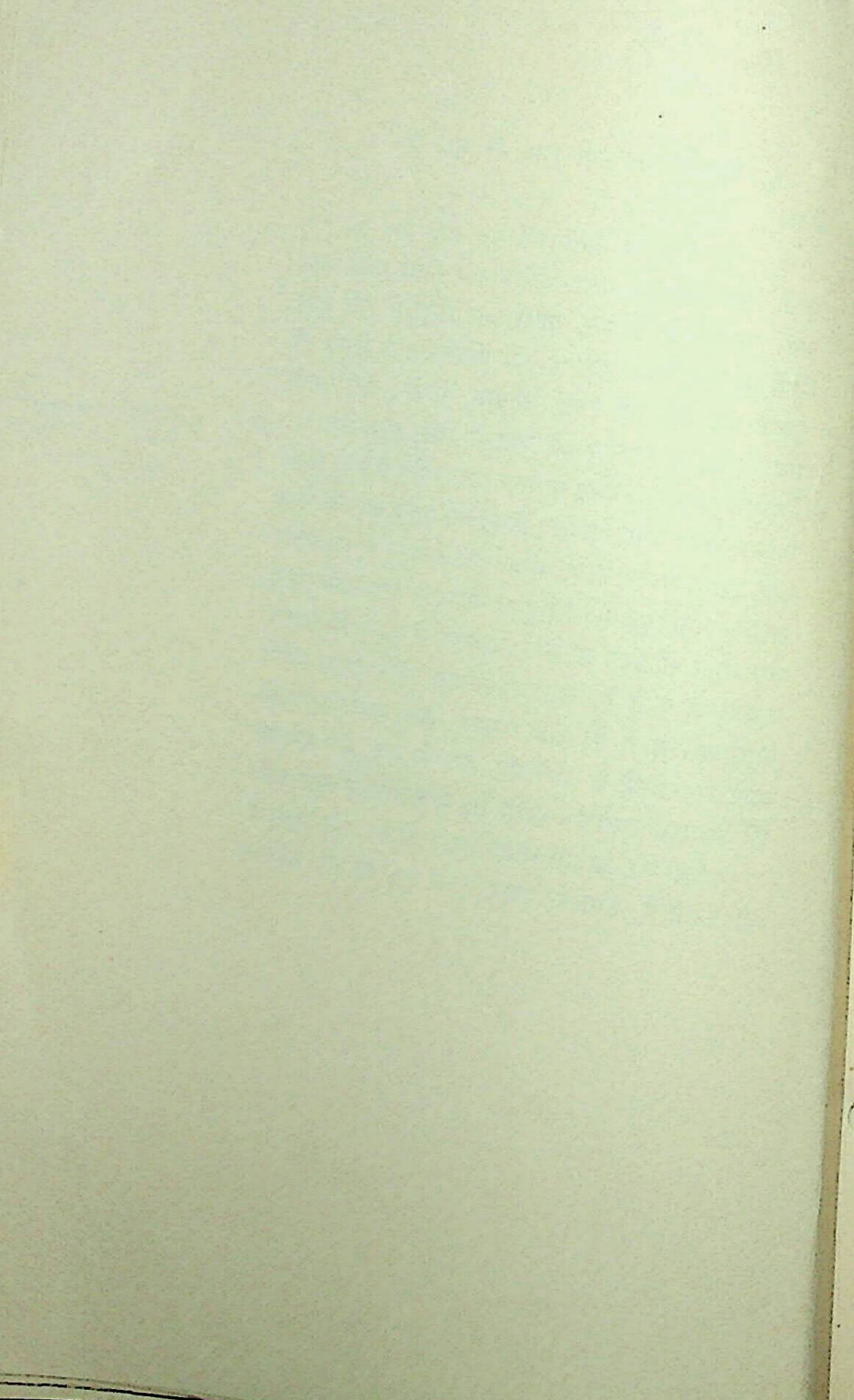
हो जाने के पश्चात् श्रद्धा, भक्ति से युक्त होकर विश्वास करके पति-पत्नी सहित अपने खाने के लिए, दीन-दुखियों को देने के लिए और प्रतिदिन दान करने के लिए एवं शेष सम्पत्ति पुत्र को सौंपकर काशीवास करने के लिए काशी में जाना चाहिए। जिसके पास कुछ भी नहीं है। वे मनुष्य भी काशी में जा कर वास करें।

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवा प्रति प्रतिज्ञा द्वयम्।
जीवतोऽन्नं ददासित्वं मुक्तिं ददाम्यहम्॥

अर्थ - शंकर जी ने अपने मानसिक सङ्कल्प से काशी को उत्पन्न किया। उसी समय भवानी अन्नपूर्णाजी से कहते हैं कि हे अन्नपूर्णे तुम सभी काशी वासियों को भोजन दो, आवास दो, भक्ति और ज्ञान प्रदान करो, किसी भी काशी वासी को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न हो। हे अन्नपूर्णे मैं मृत्यु के समय में सभी काशी वासियों को मुक्ति प्रदान करूँगा।

बाहर से केवल काशीवास करने के लिए काशी में आये हुए, स्त्री, पुरुषों को जो व्यक्ति आवास देता है या दिलाता है उनका हर सम्भव सहयोग करता है और कराता है। ऐसा मनुष्य दूसरे जन्म में रङ्क से राजा हो जाता है एवं अज्ञानी

से ज्ञानी हो जाता है। परोपकारी व्यक्ति सदा सुखी और मस्त रहता है। चूँकि हमारे सनातन वैदिक धर्मशास्त्रों में लिखा है कि काशी वासियों को सहयोग देने वाले भक्तों के प्रति दण्डपाणि, सुभ्रम, विभ्रम, भैरव, अन्नपूर्णा और बाबा विश्वनाथ जी प्रसन्न होते हैं। इसलिए वह व्यक्ति काशी में स्वर्ग का सुख प्राप्त करता है और अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है, तथा जन्म एवं मृत्यु के चक्कर से छूट जाता है। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि निष्काम सेवा करने वाला मन, वाणी से सबका कल्याण चाहने वाला परोपकारी सदा सुखी और जीवन मुक्त माना जाता है।

जो नर-नारी प्रतिदिन निष्काम सेवा और परोपकार करते हैं और प्रतिदिन दूसरों को जलपान और भोजन कराकर भोजन करते हैं, प्रतिदिन मन से परोपकार की भावना रखते हैं तथा दीन, दुःखी दरिद्र के प्रति दया रखते हैं। वे मनुष्य धन्य हैं और उनका ही संसार में जन्म लेना सफल है। प्यासे को जल, भूखे को भोजन, नङ्गे को वस्त्र और रोगी को दवा देना, सत् का दान है अतः प्रयत्न पूर्वक देना चाहिए। भगवान का दिया हुआ यह नश्वर शरीर, स्त्री, पुत्र, परिवार और धन सब भगवान का है। तुम क्या लेकर आये थे

और क्या लेकर जाओगे। भगवान की वस्तु परोपकार में लगा दो और दान करो। सत् कर्म करते हुए सीखो, अन्नक्षेत्र खोलो, सड़क पर पड़े हुए रोगियों को अस्पताल में भर्ती करो और उनकी सेवा करो, जन्म-जन्मान्तर तक आपकी शरीर में रोग नहीं आ सकता। नीरोग बने रहना चाहते हो तो परोपकार करो और सत्पात्र को दान करो, जो व्यक्ति धनी लखपति, करोड़पति और राजा होकर भी परोपकार में धन नहीं लगाता और यथा शक्ति दान नहीं करता तथा तीर्थों में जगह-जगह अन्नक्षेत्र नहीं खोलता है वह व्यक्ति अगले जन्म में महारोगी, अंगहीन और विद्याहीन होकर उत्पन्न होते हैं, वैद्य, डाक्टर उस पौष्टिक पदार्थ खाने से मना करते हैं और इस अवस्था में घर वाले भी ध्यान नहीं देते हैं। रुपये-पैसे और पौष्टिक पदार्थ के लिए तरसता रहता है। कहता है हाँ मेरा जीवन व्यर्थ है, मैं पूर्व जन्म का पापी हूँ मैंने क्या पाप किया है। हाय कष्ट, हाय कष्ट करते हुए जीवन व्यतीत करता है। इस नश्वर संसार में कौन किसका है अपने जन्म जन्मान्तर का पुण्य शुभ कर्म और अपना अच्छा व्यवहार सदा साथ में रहकर सदा सुख देता है। अतिथि की सेवा इस प्रकार करनी चाहिए। कभी-कभी अतिथि के रूप में सन्त और भगवान आपके घर में आते